एआई का दखल बढ़ेगा, लेकिन बहुत कुछ बदलने वाला नहीं : प्रो. कांकाणी

एआई से कुछ रोल्स कम होंगे, कुछ स्किल्स जुड़ेंगे मगर बहुत ज्यादा चिंता की बात नहीं, एनालिस्ट, इक्विटी रिसर्च एनालिस्ट या मार्केट एनालिस्ट ऑटोमेटेड हो जाएंगे

खास मुलाकात

हफ्ते का मेहमान

एआई को लेकर डर कुछ-कुछ 1990 जैसा, जब कंप्यूटर आने वाले थे

आने वाले समय में कई डेटा मार्केट में बना बनाया मिल जाएगा

आने वाला समय नेटवर्क आर्गेनाइजेशन का होगा

नवभारत ब्यूरो

मनोज मिश्रा ।रायपुर

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) को लेकर हर तरफ चर्चा है। इसे लेकर ढेर सारी अपेक्षाएं हैं, तो कई लोगों के मन में जॉब को लेकर असुरक्षा और चिंताएं भी हैं। ऐसे में आईआईएम रायपुर के डायरेक्टर प्रो. राम कुमार कांकाणी का कहना है कि 1990 में कम्प्यूटर आ रहे थे, तब भी उहापोह की स्थिति थी कि हमारी नौकरी का क्या होगा? लेकिन कुछ नहीं बदला। वैसे ही बहुत सारी नई टेक्नोलॉजी आई लेकिन परिस्थितियां वैसे ही हैं। एआई से कुछ रोल्स जरूर कम होंगे और कुछ स्किल्स जुड़ेंगे मगर बहुत कुछ बदलने वाला नहीं है। मेरा मानना है कि बहुत ज्यादा चिंता करने की बात नहीं है।

मैनेजमेंट शिक्षा, भविष्य में बिजनेस का स्वरूप, नए कोर्स डिजाइन करने की गुंजाइश समेत कई मुद्दों पर 'नवभारत' ने प्रो. कांकाणी से खास चर्चा की। प्रो. कांकाणी का कहना है कि एआई से एनालिस्ट, इक्विटी रिसर्च एनालिस्ट या मार्केट एनालिस्ट ऑटोमेटेड हो जाएंगे। एनालिस्ट जैसे कुछ रोल्स थोड़े कम हो जाएंगे, लेकिन जरूरी नहीं कि सभी के काम मशीन के द्वारा हो जाएगा।

इंफार्मेशन तो बहुत होती हैं। ऐसे ही डेटा के ढेर में कुछ ही काम के होते हैं। एक अच्छे बिजनेस ग्रेजुएट के कुछ ही डेटा काम आएंगे। बिग डेटा एनालिसिस में, सोशल मीडिया एक्टिविटी में, डेटा का भी एआई मूल्यांकन कर लेगा। इसका फायदा भी मिल सकता है और नुकसान भी हो सकता है।

डिजिटल ट्रांसमिशन जैसे कोर्स का बढ़ेगा महत्व

श्री कांकाणी कहते हैं कि एआई के बाद मैनेजमेंट शिक्षा में ज्यादा परिवर्तन की गुंजाइश नहीं है। एक-दो कोर्स कम हो सकते हैं और एक-दो बढ़ सकते हैं। नए कोर्स में मल्टीलिंगुअलिज्म, मल्टी कल्चरल इंगेजमेंट जैसे कोर्स के महत्व बढ़ेंगे। कुछ-कुछ स्किल्स अपने आप अपग्रेड हो रहे हैं, ऐसे में अपडेटेशन की जरूरत उतनी ज्यादा नहीं रहेगी। हां, डिजिटल ट्रांसमिशन, ह्यूमन बिहेवियर इन ए डिजिटल वर्ल्ड का महत्व बढ़ेगा। इनके लिए नए कोर्स डिजाइन करने की जरूरत पड़ेगी।

डेटा और चॉइस कैप्चर कर सकते हैं फर्म

बहुत सारे फर्म हैं, जो एआई यूज करते हैं। आने वाले समय में कई डेटा मार्केट में बना बनाया मिल जाएगा। बुटिक फर्म आपकी पसंद के डेटा उपलब्ध कराएंगे। बहुत सारी छोटी-छोटी कंपनियां आ जाएंगी, जो कि आपके डेटा और चॉइस को कैप्चर कर सकते हैं। जैसे मशीन खरीदना हो, किसी को जॉब पर रखना है, तो उसका प्रोफाइल आउट साइडर एजेंसी निकालकर दे देगी। एक व्यक्ति को जो समय प्रोफाइल बनाने में लगता था, वह मशीन फटाफट कर लेगी, लेकिन उसे सिस्टेमेटिक ढंग से बुटिक फर्म पेश करेगा।

प्रायोरिटी बेस सलेक्शन की होगी जरूरत

प्रो. कांकाणी का कहना है कि पहले से ज्यादा इंफार्मेशन हमारे पास है। टीवी, सोशल मीडिया, मोबाइल फोन हर जगह इंफार्मेशन है। एक तरह से इंफार्मेशन की बाढ़ सी आ गई और यह बढ़ते ही जाएंगे। ऐसे समय में प्रॉयोरिटी के साथ में चुनी हुई सूचनाओं को पेश करने वाली टेक्नोलॉजी की जरूरत पड़ेगी।

कमांड कंट्रोल सिस्टम हो जाएगा खत्म

आने वाले समय में आर्गेनाइजेशन थेयरी, आर्गेनाइजेशन ट्रांसमिशन की वैल्यू बहुत ज्यादा रहेगी। वर्तमान में मेट्रिक्स बेस्ड स्ट्रक्चर है। एक ऑफिसर को रिपोर्टिंग करते हैं, लेकिन आने वाला समय नेटवर्क आर्गेनाइजेशन का होगा। कमांड कंट्रोल सिस्टम खत्म हो जाएगा।

स्टूडेंट्स को कार्य अनुभव देने की जरूरत

स्टूडेंट को एक्सपोजर इंटर्नशिप, अलग-अलग आर्गेनाइजेशन में कार्य अनुभव देने से ही मिलेगा। थेयोरी के साथ ही कम से एक सप्ताह से लेकर एक माह तक के वर्क को कोर्स में शामिल करने की जरूरत है।

अच्छे संस्थानों में वर्क, चॉइस बेस स्टडी पर जोर

विदेशों या अच्छे संस्थानों में दो बातों पर जोर होता है। पहला प्रैक्टिकल। अक्सर देखने को मिलता है कि हमारे यहां कुछ कोर्स पढ़ाने के बाद एक एंडटर्म एग्जाम होता है या एक असाइनमेंट दे देते हैं, लेकिन प्रतिष्ठित संस्थानों या विदेशों में हर क्लास के बाद वर्क सबमिशन पर जोर होता है। हर क्लास के बाद प्रोजेक्ट दिए जाते हैं। स्टूडेंट पूरी मेहनत से उसे पूरा करते हैं। वहीं दूसरा बड़ा अंतर मैनेजमेंट संस्थानों का यूनिवर्सिटी स्वरूप है। यूनिवर्सिटी स्वरूप में लॉ से लेकर दूसरे डिपार्टमेंट में पढ़ने की चॉइस होती है। यहां मैनेजमेंट संस्थान एकल स्वरूप में हैं। एक ही संस्थान सभी चीजें देने की कोशिश करते हैं।

ट्रेनिंग, लर्निंग हो सकते हैं थ्रीडी बेस्ड

आने वाले समय में जिस क्षेत्र के लिए मैन पॉवर तैयार करने की जरूरत होगी, उनमें सबसे पहला है सोशल मीडिया। फिर हेल्थ केयर, डिजिटल एनेबल्ड वर्ल्ड, एआई बेस्ड कैपेसिटी डेवलपमेंट एन्वायर्नमेंट और क्लाइमेट चेंज बेस कोर्सेस के क्षेत्र में फोकस की जरूरत होगी। बड़ी संख्या में कैपेसिटी डेवलपमेंट, ट्रेनिंग, लर्निंग थ्रीडी बेस्ड हो सकते हैं।

Navbharat,25 February 2024, P.06